# साहित्य दर्पण

## वार्षिक साहित्यिक विवरणिका

# हिन्दी विभाग

## गोलाघाट कॉमर्स कॉलेज, गोलाघाट, असम

**प्रवेशांक** **वर्ष : मई 2021–2022**

जोनटि दुवरा

## विभागाध्यक्षा की ओर से....

गोलाघाट कॉमर्स कॉलेज के हिन्दी विभाग की स्थापना 1974 में हुई। हमें अति हर्ष और गौरव हो रहा है कि हिन्दी विभाग की ओर से 'साहित्य दर्पण' नामक वार्षिक साहित्यिक विवरणिका प्रकाशित होने जा रहा है। इसी प्रकार हम विभाग की ओर से विभागीय गतिविधियों को पद उन्नत करने जा रहे है। हम विभाग की ओर से प्रतिवर्ष 'देवाल पत्रिका' भी प्रकाशित करते आये है।

हिन्दी विभाग के उत्तरोत्तर और स्वर्णिम भविष्य के लिए इस विवरणिका के माध्यम से हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाने के साथ-साथ विद्यार्थियों के रचनात्मक प्रतिभा को एक मंच प्रदान करना हमारा उद्देश्य रहा है।

राजभाषा हिन्दी-सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। हिन्दी विभिन्न भाषा-भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है। राजभाषा हिन्दी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की धनी है और विचारों व भावों की अभिव्यक्ति में पूर्णसक्षम भी है। यह भारत के जन-जन के मन में बसी भाषा है। अतः हमें विश्वास है कि विवरणिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होंगे।

मालोती बांगठाई
सहायक अध्यापिका

गोलाघाट कॉमर्स कॉलेज के हिन्दी विभाग की ओर से 'साहित्य दर्पण' नामक वार्षिक साहित्यिक विवरणिका प्रकाशित होने जा रहा है। जिसे हिन्दी विभाग के लिए अत्यंत खुशी की बात है। इस विवरणिका के माध्यम से विद्यार्थियों के साहित्यिक रचनात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करना ही विभागीय कार्य का मूल उद्देश्य रहा है।

साहित्य और समाज का गहरा संबंध है। वे एक-दूसरे पर निर्भर है। साहित्य का समाज के बिना कोई महत्व नहीं है और समाज का साहित्य के बिना। साहित्यकार समाज के बाह्य और आंतरिक दोनों घटकों को उद्घाटित करता है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। इसी कारण साहित्यकार समाज में घटित आम जनता के सुख-दुख को अपनी लेखनी के माध्यम से व्यक्त करते हैं। मूलतः साहित्य का उद्देश्य लोक-कल्याण से संबंधित विचारों को प्रकट करना है। जिस साहित्य में 'बहुजन हिताय और बहुजन सुखाए' की वास्तविकता होती है, वह साहित्य समाज को एक नयी दिशा देता है।

साहित्य का उद्देश्य ही समाज का कल्याण होना चाहिए। मतलब जिस साहित्य में 'बहुजन हिताए और बहुजन सुखाए' का भाव होता है, वही साहित्य समाज को एक नई दिशा दिखा सकता है। क्योंकि इसमें समाज का मंगल होता है। इसमें समाज परिवर्तन की क्षमता होती है। वह समाज की भावनाओं के साथ चलता है। साहित्य समाज में घटित विकृत व्यवस्था के खिलाप आवाज उठाने का काम करता है। समाज में कला का महत्व होता है। मानव निर्मित समाज व्यवस्था में समय- समय पर आनेवाले परिवर्तन समाज के हर पहलू को प्रभावित करते हैं। इसलिए साहित्यकार अपने साहित्य के माध्यम से समाज का चित्रण करता है।

'साहित्य दर्पण' नामक वार्षिक विवरणिका के सफल प्रणयन के लिए समस्त रचनाकारों और विद्यार्थियों का सहृदय से आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने अपने आलेख प्रेषित कर हिन्दी विभाग का हौसला बढ़ाया है।

रिया चाहु
बी. कम. छठे सेमेस्टर

## जीने की राह

जीवन है बहत अजस्त्र झरना
बहते रहना इसका गहना।
ये कल-कल बहता-चलता जाए...
जीवन को गढ़ता-रचता जाए ॥1॥
आएं कितने भी झंझावात
तूफान जलजले सुनामी यहाँ पे।
जीवन सदा हो मुखरित खिलता...
बढ़े हर पल-क्षण और मुस्काएं ॥2॥
कौन समझ सका इसकी चालें
नहीं रोक सका वृति-गतियां!
समय सभी कुछ ठीक करे...
हमें देखनी होंगी अपनी गलतियां!
जैसा हम बोएं, वैसा काँटें
बोएँ बबूल, तो आम कैसे पाएं!
जो किया, वही हम पा रहे...
दोष औरों पे कैसे थोपे जाएं ॥4॥
हो भला, मिले सबको ही लाभ
तभी पनपती हैं मानव सभ्यतायें!
एक बनें यदि लोलुप-लालची...
तो फिर कैसे होएगा विकास यहाँ ॥5॥
'कोरोना', संकट महामारी
हमें आयी सिखाने सबक यही!
अब भी हम बदल सकें तो है ठीक...
वरना, भोगना होगा कष्टों को यहीं ॥6॥
होती "जीने की राह", हमसे ही शुरू
और हमपे ही आकर ख़त्म होए!
सोचें 'सकारात्मक', बनें विधेयात्मक...
तभी सबका जीवन यहाँ मुस्काए ॥7॥

हन्नाह ताँती
बी. ए. चतुर्थ सेमेस्टर

## कोरोना

'को' कोई तो होगा हमारा रखवाला
जो, संभाल रहा है जीव-जन्तु जगत।
फिर, काहे की व्यर्थ चिंता करना...
श्रीहरि करेंगे इस 'कोराना' को पस्त ॥1॥
'रो', रोना-धोना काहे का करना
बस रहना होगा सतर्क चाक-चौबंद।
नित करनी होगी श्रीप्रभु भक्ति...
'कोरोना' का होगा तभी बढ़ना बंद ॥2॥
'ना', नाम श्रीराम का भजते रहना
और सोच सकारात्मक बनाए रखना।
'कोविड' 19 के, इस भूत को...
पनपने से ही पहले खात्मा करना ॥3॥
"कोरोना", जैसी महामारी-आपदाएं
आती रहती शताब्दियों में हर बार!
पर मानवीय अथक प्रयासों से सदा...
हम जीतते आएं इससे हर बार ॥4॥

## सुविचार

**आप चाहे जितने**
**अच्छे शब्द पढ़ लें, सुन लें**
**या बोल लें, ये शब्द आपका**
**भला तब तक नहीं करेंगे, ज़ब**
**तक आप इन्हे अपने जीवन में**
**उपयोग में नहीं लाते।** **- गौतम बुद्ध**

**जब तक तुम स्वयं पर विश्वास नहीं करते,**
**परमात्मा में विश्वास कर नहीं सकते।** **- विवेकानंद**

शिवानी भगत
बी. ए. चतुर्थ सेमेस्टर

## बदलता परिवेश

देता है संदेश लोगों का यह वेश
बदल रहा परिवेश या बदल रहा मेरा देश
बदल रहा मेरा देश बदल रहा है प्रेम दिलों का
बदल रही है नैतिकता।
राग द्वेष सब लेकर बैठे निभाया ना जाता है रिश्ता
पूजा-पाठ का दौर रहा ना संस्कृति से जुड़ता कोई कोई
केवल दिखावे की दौड़ में भाग रहा है हर कोई।
परिधि मेरे चारों ओर की
मेरा हृदय झुंझलाती है
स्नेह भावना किसी के व्यवहार में
किचिंत् नजर ना आती है
बदलते परिवेश में बदली परिस्थितियाँ
साधारण ही नहीं बदल गई हस्तियाँ
जीवन शैली में आया परिवर्तन
बदला जीवन, बदल गया है मन
परिवेश मेरा मुझसे कह रहा,
बदल दे मुझे या बदल जा खुद ही
कर ले अब पहल तू ही
या स्वीकरा ले इसको ऐसे ही
चिंतनीय है स्थिति अवश्य
पर यदि नए परिधान है सभ्या
पहनने में ना हो कोई भय
संस्कारों से जोड़ने का ही हो ध्येया
बदल जाओ बदलते परिवेश के साथ
पर संस्कारों की नींव हो पक्की
देखो खुद को पिसने मत देना
बदलते समय की चल रही है चक्की
बदलते समय की चल रही है चक्की

प्रेरणा जैसवाल
बी. कम. चतुर्थ सेमेस्टर

## दौर ये भी गुजर जाएगा

दौर ये भी गुजर जाएगा
सेनेटाइजर कही पीछे रह जाएगा
किसी दराज के कोने में मास्क बैठा मिलेगा।
एक दूजे के गले में बाहे डाले यार मिलेंगे
और शरारतों से भरे पार्क फिर से गुलजार होंगे...
फिर होगी बस पर चढ़ने की अपाधापी
ट्रेन छुट न जाय कही
फिर से होगी भागा भागी...!
यूनिफॉर्म में बच्चे फिर दिखेंगे लंच बॉक्स और वाटर बॉटल टांगे सुबह
स्कूल के गेट पर हाथ हिलाते मिलेंगे...!
हाथों को थामने की हिचक ना मिलेंगी
बज उठेगी फिर से स्कूल की घंटिया...!
मुस्कुराते चेहरे एक नये दौर का आगाज करेंगे
दौर ओ भी आयेगा...
दौर ये भी गुजर जाएगा।

## सुविचार

**आप जीवन में जो कुछ भी चाहते है वे प्राप्त कर सकते है बस आप दूसरे लोगों की मदद करना शुरू कर दे।** - जिग जिगलर

**दुख और विपदा जीवन के दो ऐसे मेहमान है, जो बिना निमंत्रण के ही आते है।** - महर्षि वाल्मीकि

विशाखा पासवान
बी. कम. छठे सेमेस्टर

## वर्तमान परिस्थिति

वर्तमान परिस्थिति अच्छी नहीं भाई,
कोरोना ने सब को, डरा कर रखा है।
इससे खेलो मत, यह कोई खिलौना नहीं,
इस से डरो भाई, कोई मजाक नहीं।
अभी देश की हालत है, वह तो नमूना है,
नहीं सुधरे, नहीं समले, नहीं माने तो।
यह सुन लो भाई, जो अभी देश की,
हालत है और वह भयानक हो सकती है।
हमारी ही तो गलती है, यह सब हम ने है बनाई,
हमने अपने स्वार्थ पूर्ति में, कि आ प्रकृति पर आई।
जिसके गोद में खेलते, मरने और जीते,
उसी को दी कुचल के, आज हम सब ने कराई।
यह मौसम नहीं मुस्कुराहटों का, फिर भी है मुस्कुराना,
मुस्कुरा के, यह पल भी गुजारना।
बहुत खोये अपनों ने अपनों को, अब और नहीं भाई,
अब हमें मिलकर, इस कोरोना को है हराना।
यही कहना है, सबसे और यही है मेरी विनति,
मनुष्य जीवन बड़ा अनमोल है, कि ऐसे नहीं मिलती।
यहां पर रहे हम, या रहे फिर हमारी पीढ़ी,
सभी की यह प्रतिज्ञा हो, बनाए स्वर्ग सी धरती।

प्रिया काश्यप
बी. ए. छठे सेमेस्टर

## हिन्दुस्तान का गौरव

हिन्दी सिर्फ भाषा नहीं, इस देश का गौरव है।
संवेदनाओं का उदार, हम सब का अभिमान है।
हिन्दी हमारी चेतना वाणी का शुभ वरदान है।
हर दिल की धड़कन सबसे खुबशुरत भाषा है।
जन-जन की आवाज, हिन्दी भारत की आशा है।
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा इसपे हमें नाज अपार है।
अपनेपन की मिश्री जैसी ये प्यारी सी जुबान है।
सारी भाषाओं से देखो कितनी ये आसान है।
हिन्दी युवा प्रेरक की वाणी का आदर्श है।
साहित्य का असीम सागर का हिन्दी भण्डार है।
हिन्दी पढ़ने और पढ़ाने का सहज-सुगम उपाय है।
हिन्दी से ही हुआ हमारे हिन्दुस्तान का उत्थान है।
हिन्दुस्तानी है हम, हमें हिन्दी भाषा पर गर्व है।
उसे सम्मान दिलाना और देने का कर्तव्य हमारा है।
जब तक आसमान में छाई चाँद, सुरज की उजियार है।
तब तक वतन की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही हर बार है।

## सुविचार

**पहले आपको खुद बदलने होगा**
**जैसा की आप दुनिया को देखना चाहते है।**

**- महात्मा गाँधी**

**शिक्षण एक बहुत ही महान पेशा है**
**जो किसी व्यक्ति के चरित्र, क्षमता,**
**और भविष्य को आकार देता है।**
**अगर लोग मुझे एक अच्छे शिक्षक के**
**रूप में याद रखते हैं, तो मेरे लिए**
**ये सबसे बड़ा सम्मान होगा।**

**- डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम**

रानी गुप्ता
उच्चतर माध्यमिक, प्रथम वर्ष

## आजादी

आजादी की कभी शाम ना
होने देंगे
शहीदों की कुर्बानी
बदनाम ना होने देंगे,
बची हो जब तक एक भी
बूँद लहू की रगों में,
तब तक भारत माता का
आँचल नीलाम न होने
देंगे....
बन्दे मातरम्!
भारत माता की जय...

संध्या गुप्ता
बी. कम. चतुर्थ सेमेस्टर

## कोरोना काल : समाज और साहित्य

विश्व में कोरोना का जानलेवा संक्रमण फैला हुआ है। आज कोरोना काल के चलते इंसान ही इंसान से दूरी बनाए हुए हैं। हमने यह कभी नहीं सोचा था क एक दौर ऐसा भी आएगा जब इंसान ही इंसान से दूरियां बनाएगा संपूर्ण समाज में करोना का डर बना हुआ है, एक और जहां प्रत्येक व्यक्ति करोना से बचने के लिए अपने-अपने घरों में घरेलू उपचार कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर सरकार द्वारा लगाए लॉकडाउन में विभिन्न साहित्यकारों, कवियों व सभी लोग जो साहित्य से जुड़े हैं उन्होंने इस लॉकडाउन में कई रचनाएं कर डाली।

कवि अपनी कविताओं के माध्यम से ना केवल खुद की अपितु समाज के हर उस तबके की आवाज बन बैठे हैं "जिन्हें हम कोई नहीं सुन पाता' और यह सत्य भी है आखिर लॉकडाउन हर किसी के लिए एक समान तो नहीं। हमने सोचा था 2021 में सब पहले जैसा ठीक हो जाएगा परंतु अभी तक 2021 के हालात भी 2020 जैसे ही नजर आ रहे हैं हमें ज्ञात है कि विगत वर्ष (2020 में) लॉकडाउन के चलते कई लोगों को अपनी नौकरी से हाथ धेना पड़ा, कई लोगों को पलायन भी करना पड़ा। सरकार द्वारा गरीबों तक अनाज पहुंचाया गया सरकार की यह कोशिश रही कि प्रत्येक व्यक्ति को अनाज मिल सके। हम सभी को मालूम है कि करोना काल के चलते ना केवल हमारे देश बल्कि संपूर्ण विश्व के हर देश को आर्थिक व सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। विगत वर्ष संपूर्ण देश में लगे लॉकडाउन का सबसे बुरा प्रभाव मजदूरों व आदिवासियों की आजीविका पर पड़ा हालांकि सरकार द्वारा यह कोशिश रही कि प्रत्येक वह व्यक्ति जिनसे रोजगार छिन गया सब तक अनाज पहुंचाया जाए परंतु कई जगह स्थिति अधिक गंभीर भी नजर आई।

साहित्य की अलग-अलग विधाओं में लॉकडाउन के दौरान रचनाएं हुई हैं। साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है समाज में जो भी घटित होता है उसका असर एक साहित्यकार की रचनाओं में साफ-साफ झलकता है। कवि अपनी कविताओं के माध्यम से बहुत सरल व सहज तरीके से आमजन की तकलीफों को समाज के आगे रखने का प्रयास करता है इसलिए तो कहा जाता है-'जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि।

मैं खुद अपना उदाहरण देकर यहां स्पष्ट करना चाहती हूं कि एक रचनाकार वास्तव में संवेदनशील होता है और एक रचनाकार का प्रयास सदैव लोगों को सही रचनाओं द्वारा समाज में चल रही परेशानियों के बारे में बताने का होता है। मेरा मानना है कि एक रचनाकार का यह कर्तव्य बनता है कि वह अपनी रचनाओं को लिखते समय यह ध्यान रखें कि उसकी रचनाएं भविष्य में आने वाली पीढ़ी के लिए साहित्यिक स्त्रोत बन सके। भविष्य में लोग समझ पाए कि भूतकाल में की गई गलतियों को वर्तमान व भविष्य में ना दोहराया जाए। मैं खुद अपने खाली समय व सोशल मीडिया का प्रयोग अपनी रचनाओं का विकास करने के लिए करती हूं। लॉकडाउन में मैंने कई कविताएं व निबंध लिखने का प्रयास किया। लॉकडाउन के चलते मैंने कुल 18 से 20 कविताएं लिखी व पांच से छह निबंध लिखें।

साहित्य कभी रुकता नहीं है बल्कि निरंतर बढ़ता रहता है साहित्यकार अपनी रचनाओं द्वारा समाज के हर वर्ग व हर विषय को संपूर्ण जगत में फैलाने का निरंतर प्रयास करते रहते हैं अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि "साहित्य समाज का दर्पण होता है।"

पंकज प्रजापति
बी. ए. छठे सेमेस्टर

# अनुवाद मूल्यांकन क्या है?

पुनरीक्षण और मूल्यांकन दोनों ही अनुवाद के बाद की प्रक्रियाएँ है और दोनों में ही अनुवाद की जाँच की जाती है। पुनरीक्षण में जहाँ जाँच के साथ सुधार संशोधन और संपादन शामिल होता है वहाँ मूल्यांकन में केवल जाँच की जाती है। जाँचने के पश्चात् अनुवाद के स्वरूप और गुणवत्ता, उसकी उपलब्धियों और अनुपलब्धियों पर टिप्पणी दी जाती है।

अनुवाद मूल्यांकन के लिए अंग्रेजी में दो शब्द प्रचलित हैं **Translation Quality Assessment** और **Translation Evaluation**। वास्तव में दोनों का ही संबंध अनुवाद की गुणवत्ता की जाँच से है। मूल्यांकन द्वारा यह निर्णय दिया जाता है कि अनूदित पाठ मूल पाठ के स्तर का है अथवा नहीं, उसके सहपाठ के रूप में प्रयुक्त हो सकता है अथवा नहीं। साथ ही यह भी पता लगाया जाता है कि मूलपाठ से अलग रखे जाने पर(अथवा उन लोगों द्वारा पढ़े जाने पर जो स्त्रोत भाषा नहीं जानते) अनूदित पाठ उस संपूर्ण संदेश और उसमें निहित आशय का वहन करता है अथवा नहीं जो मूल पाठ में निहित है। ऊपर अंग्रेजी में दिए गए **Assesment** और **Evaluation** के लिए यद्यपि हिंदी में एक ही पर्याय मूल्यांकन प्रयुक्त होता है तथापि दोनों में पर्याप्त अंतर है।

**Quality Assessment** मुख्यतया सूचनापरक पाठ(**Text**) का होता है। सार्वजनिक सूचना के लिए सार्वजनिक स्थलों पर लगे बोर्डों पर दी गई सूचना, रेलवे प्लेटफार्मों, बस अड्डे, हवाई अड्डों आदि पर यात्रियोपयोगी सूचनाएँ और यातायात संबंधी जानकारी आदि हो सकती है। इसके अलावा उद्योग निर्मित वस्तुओं के लेबलों पर अथवा उनके साथ सप्लाई की जाने वाली पुस्तिकाओं, पर्चो, पैम्पलेटों आदि पर दी गई सूचना भी हो सकती है। व्यापक वर्ग के उपयोग के लिए दी गई वे सभी सूचनाएँ जो पढ़कर तात्कालिक समझी और उपयोग में लाई जाने वाली हों ऐसे पाठों के अंतर्गत आती है। इन सूचनाओं का अनुवाद विभिन्न भाषाओं के आम लोगों को तुरंत संप्रेषण की अपेक्षा रखता है। इस तरह के अनुवाद का मूल्यांकन संदेश के सही-सही संप्रेषण की दृष्टि से किया जाता है।

**Evaluation** में भी मूलरूप से अनुवाद की गुणवत्ता की ही जाँच की जाती है लेकिन इस शब्द का प्रयोग विविध विषयों के पाठों और कृतियों के अनुवादों की जाँच के लिए प्रयुक्त होता है। इसमें सूचनापरक और सार्वजनिक दोनों के संदर्भ में प्रयुक्त गुणवत्ता की जाँच के साथ-साथ अनुवाद के महत्व की स्थापना भी शामिल होती है। यदि मूल्यांकन किसी साहित्यिक रचना का किया जा रहा है तो यह पता लगाया जाता है कि मूलकृति का संदेश अनुवाद में किस हद तक वहन हुआ है। अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवाद ने कृति में क्या छोड़ा है और क्या जोड़ा गया है। क्या कृतिकार के संदश के अतिरिक्त कोई और संदेश भी अनुवाद वहन कर रहा है यदि हाँ तो वह क्या है? अनुवाद की पुनः सृजन प्रक्रिया के दौरान क्या भाषा और भाव के स्तर पर कोई नूतन उद्भावना हुई है। यदि हुई है तो वह किस कारण हुई है अनुवादक की अपनी मनोभूमिका के कारण अथवा रचना और अनुवाद के बीच देश-काल के अंतराल के करण।

भाषा-शैली के स्तर पर भी मूल और अनुवाद की तुलना करते हुए अनूदित पाठ की जाँच की जाती है। फिर लक्ष्यभाषा की सर्जनात्मक रचनाओं से अनूदित कृति की तुलना की जाती है।

# विभागीय गतिविधियाँ

## राष्ट्रीय स्तर पर (विषय : वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर आधारित) ऑनलाईन हिन्दी कविता लेखन प्रतियोगिता, 7 जून, 2021






असम का
सबसे सक्रिय
हिन्दी डिजिटल मीडिया
8882276606

अमित नागोरी

**गोलाघाट।** गोलाघाट वाणिज्य महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा 7 जून 2021 को राष्ट्रीय स्तर पर (विषय: 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर आधारित') ऑनलाइन हिंदी कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्षआ जोनटी दुवरा ने बताया है कि इस प्रतियोगिता में सुनील गुप्ता, सहायक प्रबंधक (सेवानिवृत्त), जयपुर ने प्रथम पुरस्कार, डॉ वंदना मिश्र मोहिनी, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, श्री वैष्णव वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर ने द्वितीय पुरस्कार और प्रतिभा गुप्ता, हिंदी व्याख्याता, गवर्मेंट सीनियर विद्यालय, दांतिल, राजस्थान ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। आयोजन समिति ने सभी को बधाई दी हैं।

Tags # गोलाघाट

## राष्ट्रीय स्तर पर (विषय : हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर) ऑनलाईन कविता लेखन प्रतियोगिता, 30 सितंबर, 2021




## आभूषण एवं फूलों के गुलदस्ता बनाने का कार्यशाला, 14 मार्च, 2022

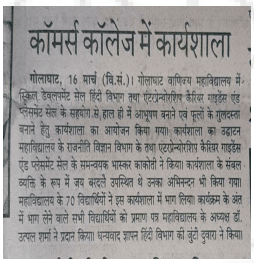



कॉमर्स कॉलेज में कार्यशाला

गोलाघाट, 16 मार्च (वि.सं.)। गोलाघाट वाणिज्य महाविद्यालय में स्किल डेवलपमेंट सेल हिंदी विभाग तथा एंटरप्रेन्योरशिप कैरियर गाइडेंस एंड प्लेसमेंट सेल के सहयोग से हाल ही में आभूषण बनाने एवं फूलों के गुलदस्ता बनाने हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के तथा एंटरप्रेन्योरशिप कैरियर गाइडेंस एंड प्लेसमेंट सेल के समन्वयक भास्कर काकोती ने किया। कार्यशाला के संबल व्यक्ति के रूप में जय बरदलै उपस्थित थे उनका अभिनन्दन भी किया गया। महाविद्यालय के 70 विद्यार्थियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र महाविद्यालय के अध्यक्ष डॉ. उत्पल शर्मा ने प्रदान किया। धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग की जुंटी दुवारा ने किया।

Workshop on artificial jewellery making held at Golaghat

CORRESPONDENT

DERGAON, March 15: A workshop on 'Artificial jewellery making and preparation of bouquets' was organised by the Skill Development Cell and the Hindi Department of Golaghat Commerce College in association with its Entrepreneurship Career Guidance and Placement Cell on Monday.

The welcome address on the occasion was delivered by the Head of the Department of Political Science and coordinator of Entrepreneurship Career Guidance and Placement Cell Bhaskar Kakati, while college principal Dr Utpal Sarmah, through his motivational speech, encouraged the participants to attend such unconventional workshops.

The resource person, with specialised skills in artificial jewellery making and flower arrangement, was incidentally a former student of the college, who was accorded a warm felicitation by the college fraternity. The workshop was attended by 70 participants and ended with a vote of thanks offered by the Head of the Department of Hindi, Junti Dowerah.

## गोलाघाट जिला पुस्तकालय भ्रमण, 24 फरवरी, 2022

परामर्शदाता : श्रीमती जोनटि दुवरा, मालती बांगठाई    सदस्य : प्रेरणा जैसवाल, संध्या गुप्ता    अलंकरण : हिन्दी विभाग